'डाक पंजियन सं. जयपुर सिटी/247/2018-20
स.प.सं. 66332/97

पथ-प्रेरक

पाक्षिक

वर्ष 22 | अंक 22 | 4 फरवरी, 2019 | कुल पृष्ठ: 8 | एक प्रतिः रुपए 7.00 | वार्षिक : रुपए 150/-

देशभर में उत्साह से मनाई संघ के संस्थापक की जयन्ती

'पूज्य तनसिंह जी का साहित्य ही उनकी जीवनी' : संघ प्रमुख श्री

श्री क्षत्रिय युवक संघ के संस्थापक पूज्य तनसिंह जी की 95वीं जयन्ती पूरे देश में स्वयंसेवकों व समाजबंधुओं द्वारा उत्साहपूर्वक मनाई गई। 20 से 27 जनवरी तक जयंती सप्ताह के रूप में देशभर में विभिन्न स्थानों पर पूज्य श्री की स्मृति में कार्यक्रमों का आयोजन हुआ। जयपुर में मुख्य कार्यक्रम केन्द्रीय कार्यालय 'संघशक्ति' में माननीय संघप्रमुख श्री के सान्निध्य में 27 जनवरी को सम्पन्न हुआ, जिसमें पूरे शहर से समाजबंधुओं व मातृशक्ति ने भाग लेकर पूज्य श्री को स्मरण किया। समारोह को संबोधित करते हुए संघप्रमुख श्री ने कहा कि अभी हमने एक गीत गाया 'मैं निर्झर हूं पर्वत से बह' यह गीत पूज्य तनसिंह जी के जीवन की कहानी है। एक झरने के किनारे प्रकृतिस्थ होकर उन्होंने यह गीत लिखा और यही उनकी जीवनी है। उन्होंने जब से होश संभाला तब लिखना प्रारम्भ किया अपने बारे में

और समाज के बारे में। समाज को क्या करना चाहिए, मैंने क्या किया और तुम क्या कर सकते हो, यह सारा विवरण अपने जीवन में ही लिख दिया, चिंतनशील लोग प्रेरणा ले सकते हैं। पूज्य तनसिंह जी ने केवल अपना जीवन ही क्षात्रभाव के साथ नहीं जीया बल्कि इस भाव के साथ जीने का मार्ग प्रदान किया। उन्होंने हमें सोचने को मजबूर किया कि हम इस संसार के मालिक नहीं बल्कि चौकीदार हैं, अपने आपको पहचानने का मार्ग बताया। तनसिंह जी के जीवन से निकली तरंगों का ही परिणाम श्री क्षत्रिय युवक संघ है। उन्होंने बताया कि कोई व्यक्ति अपवित्र हो सकता है लेकिन मार्ग सदैव पवित्र रहेगा, यह संघ सदैव पवित्र रहेगा। संघ शाश्वत सुख एवं शांति का मार्ग है। हमारी आसक्ति को क्षीण करने का मार्ग है। संघ शाश्वत सुख और शांति को हमारे जीवन में पिरोने का पवित्र मार्ग है। सूर्य के सामने जो आता है वही प्रकाश पाता है उसी प्रकार जो संघ के संपर्क में आएगा वही संघ की पवित्रता को पा सकेगा। कार्यक्रम में केन्द्रीय कार्यकारी गजेन्द्रसिंह आऊ ने पूज्य तनसिंह जी का परिचय प्रस्तुत किया। कार्यक्रम के बाद सहभोज का आयोजन किया गया जिसकी व्यवस्था परस्पर सहयोग से की गई थी।

गुजरात के बनासकांठा प्रांत के रेलुची गांव में आयोजित कार्यक्रम को संबोधित करते हुए वरिष्ठ स्वयंसेवक अजीतसिंह धोलेरा ने कहा कि हम पूज्य तनसिंह जी की राह के राही तब ही बन सकते हैं जब उनकी वेदना को हृदयगत करेंगे। उनका मानना था कि जिसे अन्यों को जगाना है वह सो नहीं सकता और जीवन भर उन्होंने इसी बात को चरितार्थ किया। धोलेरा ने कहा कि गीता कोई ग्रंथ नहीं बल्कि मानस शास्त्र है और क्षत्रिय कोई जाति नहीं बल्कि वृत्ति है। तनसिंह जी का विचार ही उनका जीवन है यदि हमें तनसिंह जी को हमेशा रखना है तो उनके विचार को हमारे में चरितार्थ करना पड़ेगा। संघ गीता का ही क्रियात्मक स्वरूप है, सम्पूर्ण योग मार्ग है, इस पर चलने वाले का कभी अहित नहीं होगा।

(शेष पृष्ठ 3 पर)

(श्री क्षात्र पुरुषार्थ फाउण्डेशन का गठन)

'समाज के लिए जीने वाले लोग चाहिए'

श्री क्षत्रिय युवक संघ की स्थापना बहुत पहले हो गई लेकिन उसकी विभिन्न मोर्चों पर विस्तार की आवश्यकता आज भी बनी हुई है। उसी विस्तार की योजना का एक अंग है श्री क्षात्र पुरुषार्थ फाउण्डेशन। समाज में विभिन्न विषयों पर बहुत काम करने की आवश्यकता है, अच्छे लोगों की आवश्यकता है जो लोगों को दिशा दे सकें। अपने लिए नहीं समाज के लिए जीवित रहने का संकल्प करने वाले लोगों की आवश्यकता है और ऐसे लोगों को साथ मिलकर चलने की आवश्यकता है। 27 जनवरी को 'संघशक्ति' में श्री क्षात्र पुरुषार्थ फाउण्डेशन की स्थापना को लेकर आयोजित बैठक को संबोधित करते हुए माननीय संघ प्रमुख श्री ने उपर्युक्त बात कही। उन्होंने कहा कि व्यवस्था के प्रति सकारात्मकता के लिए यह संगठन बनाया है तो सर्वप्रथम स्वयं के प्रति सकारात्मक बनें कि हम गलत काम नहीं होने देंगे। यदि हम सब ऐसा चाहेंगे तो कुछ भी गलत नहीं होगा। आप सबके पास बहुत प्रतिभाएं है यदि उनका हेतु समाज बन जाए तो संभावनाएं ही संभावनाएं हैं। श्री क्षात्र पुरुषार्थ फाउण्डेशन का अर्थ बताते हुए माननीय संघ प्रमुख श्री ने कहा कि श्री का अर्थ संपन्नता होती है, ऐश्वर्य होता है। क्षात्र का अर्थ क्षत्रियत्व है। क्षात्र भाव केवल राजपूतों की बात नहीं करता बल्कि राजपूतों को मजबूत इसलिए करना है ताकि हम दूसरों को संरक्षण दे सकें। पुरुषार्थ के द्वारा भाग्य को भी बदला जा सकता है और फाउण्डेशन का अर्थ नींव होता है। आप सभी इसकी नींव बनें।

हमारा यह संगठन सबके सहयोग से ही नहीं बल्कि हम सबके सामूहिक चिंतन से आगे बढ़ेगा ऐसा हमारा विश्वास होना चाहिए।

राजस्थान के विभिन्न क्षेत्रों से आए युवाओं के बीच चर्चा करते हुए प्रारम्भ में इस संगठन के गठन की पृष्ठभूमि बताई गई। संगठन के संयोजक यशवर्धनसिंह झेरली ने संगठन के उद्देश्यों को विस्तार से समझाया। सह संयोजक गजेन्द्रसिंह मानपुरा ने संगठनात्मक स्वरूप बताते हुए कहा कि यह संगठन श्री क्षत्रिय युवक संघ के अनुषांगिक संगठन के रूप में काम करेगा। प्रतिवर्ष 22 दिसम्बर को माननीय संघ प्रमुख श्री इसके लिए एक संयोजक एवं दो सह संयोजक नियुक्त करेंगे।

(शेष पृष्ठ 7 पर)

प्रणेता से प्रेरणा

पूज्य तनसिंह जी श्री क्षत्रिय युवक संघ के प्रणेता हैं। उनका जीवन हम सब स्वयंसेवकों एवं सहयोगियों के लिए प्रेरणा का स्रोत है। उनके जीवन की हर घटना हमारे लिए दिशा दर्शक है जो हमें उनके मार्ग पर बढ़ने की प्रेरणा देती है। ऐसी ही प्रेरणादायी घटनाओं का संकलन पथप्रेरक के इस कॉलम में धारावाहिक रूप से प्रकाशित किया जा रहा है।

मनुष्य के सामने आवश्यकताओं का अंबार सदैव बना रहता है। सामान्य मनुष्य की समस्त ऊर्जा अपनी इन्हीं आवश्यकताओं से जूझते हुए गुजर जाती है लेकिन श्रेष्ठ पुरुष उन सभी आवश्यकताओं में से उचित का चयन कर अपनी ऊर्जा का श्रेष्ठतम के लिए उपयोग करते हैं। मनुष्य यदि अपनी भौतिक आवश्यकताओं को देखे तो बहुत कम ऐसी होती हैं जो जीवन को स्वस्थ बनाए रखकर जन्मजात उद्देश्य की ओर उन्मुख कराने वाली होती हैं। शेष सभी आवश्यकताएं मन की होती हैं जिनमें से उचित का चयन आवश्यक होता है। जो ऐसा करता है वह श्रेष्ठता की ओर प्रवाहित होने में अपनी ऊर्जा का उपयोग करता है, शेष सभी तो उन्हीं आवश्यकताओं के भंवर में उलझे रहकर देव दुर्लभ मानव तन को खपाते रहते हैं। पूज्य तनसिंह जी इस बात के प्रति विशेष सावधानी रखते थे। वे स्वयं तो अपनी आवश्यकताओं पर अंकुश रख उदाहरण पेश करते ही थे, साथ ही अपने साथियों के व्यवहार पर भी इस बाबत नियंत्रण रखते थे। वे आवश्यकता पूर्ति के लिए कर्ज लेने के सख्त खिलाफ थे। यदि हमारे पास संसाधन नहीं हैं और जीवन मरण का प्रश्न नहीं है तो ऐसी आवश्यकता को स्थगित करने में विश्वास करते थे और ऐसा ही करने की अपने साथियों को प्रेरणा देते थे। हर आवश्यकता को परख कर यह तय करने की प्रेरणा देते थे कि क्या इसके बिना हमारा काम चल सकता है? ऐसी ही एक घटना का जिक्र यहां किया जा रहा है। उनके द्वारा प्रारंभ किए व्यवसाय में साथ में काम कर रहे एक स्वयंसेवक ने एक बार अपने वेतन के अतिरिक्त पूज्य श्री से कर्जा मांगा। कारण पूछने पर बताया कि गांव में पिताजी की छतरी बनवानी है। पूज्य श्री ने उन्हें उधार देने से स्पष्ट मना करते हुए कहा कि पिताजी की छतरी बनाना ऐसा आवश्यक काम नहीं है जिसके लिए कर्जा लिया जाए। ये सब प्रदर्शन एवं प्रतिष्ठा पर होने वाले खर्च हैं और अति आवश्यक होने पर भी उसी सूरत में इन पर खर्चा किया जाना चाहिए जब पास में अतिरिक्त धन हो। पूज्य श्री प्रायः हर आवश्यकता को इसी तर्ज पर तौलने की बात करते थे। हमारे लिए यह आवश्यक है कि जरा हम विचार करें कि हमारी जिन आवश्यकताओं को लेकर हम इतने परेशान रहते हैं क्या वे पूज्य श्री के उन मापदण्डों पर खरी उतरती हैं। यदि हम इन मापदंडों का कुछ अंश भी अपनाएं तो आवश्यकताओं के भंवर में फंसने से बच सकते हैं।

जीवनोपयोगी जानकारी

गतांक से आगे.... - अभयसिंह रोडला

(2) कृषि अर्थशास्त्र (Agricultural Economics) : इसके अन्तर्गत कृषि उद्योग में अर्थशास्त्रीय सिद्धान्तों के प्रयोग का अध्ययन किया जाता है। कृषि उत्पादों हेतु बाजार की स्थिति, संसाधन, वितरण, कृषि क्षेत्र में निवेश के अध्ययन के साथ ट्रेड पैटर्न, मौसम उपकरण, उपभोक्ता प्राथमिकताओं तथा उत्पादन प्रविधियों की जानकारी भी इसमें सम्मिलित है। इस क्षेत्र में स्नातक, स्नातकोत्तर तथा पी.एच.डी. कोर्सेज उपलब्ध है।

(3) डेयरी फार्मिंग : भारत विश्व का सबसे बड़ा दुग्ध उत्पादक देश है। अतः डेयरी फार्मिंग के अन्तर्गत देश में रोजगार की वृहद् संभावनाएं है। डेयरी उद्योग में प्रमुखतः दो गतिविधियां सम्मिलित हैं :

(i) उत्पादन : इसमें दुग्ध उत्पादन तथा उससे संबंधित अन्य गतिविधियों जैसे उच्च उत्पादन वाली पशु नस्लों का प्रजनन तथा उनकी देखभाल आदि सम्मिलित है। इस क्षेत्र में पशु विज्ञानी, प्रोक्योरमेंट ऑफिसर, डेयरी वैज्ञानिक आदि के रूप में कैरियर बनाया जा सकता है। **(ii) प्रोसेसिंग (प्रसंस्करण) :** इसके अन्तर्गत दुग्ध वितरण तथा दूध का डेयरी उत्पादों में परिवर्तन की प्रक्रिया सम्मिलित है। इस प्रक्रिया में घी, मक्खन, आइसक्रीम, चीज चॉकलेट आदि उत्पाद निर्मित किए जाते हैं।

नेशनल डेयरी डेवलपमेंट बोर्ड (NDDB) एक प्रमुख सार्वजनिक उपक्रम है जो कृषि उद्योगों के विकास हेतु योजना निर्माण, उनके क्रियान्वयन तथा वित्तीयन संबंधी गतिविधियों में संलग्न है।

(4) डेयरी तकनीक व प्रबंधन : इसके अन्तर्गत डेयरी क्षेत्र में तकनीकी तथा प्रबंधकीय विशेषज्ञता वाले अभ्यर्थियों हेतु कैरियर निर्माण के अवसर उपलब्ध हैं। डेयरी फार्म के प्रबंधन व नियोजन, दुग्ध संरक्षण की प्रविधियों का विकास, सहकारी संस्थाओं आदि का अध्ययन इसके अन्तर्गत किया जाता है। **(5) हॉर्टीकल्चर (बागवानी) :** यह कृषि विज्ञान की वह शाखा है जिसके अन्तर्गत शाक-सब्जी, पुष्प, फल, औषधिय पादपों आदि की कृषि के साथ उद्यान-निर्माण, नर्सरी प्रबंधन, ग्रीन हाऊस, बगीचों आदि के निर्माण का अध्ययन किया जाता है। **(6) पॉल्ट्री फार्मिंग (Poultry Farming) :** पॉल्ट्री फार्मिंग भारत में एक तेजी से विकसित होता हुआ उद्योग है जो लगभग 7 लाख लोगों को रोजगार उपलब्ध करवा रहा है। इसमें पॉल्ट्री फॉर्म का प्रबंधन, मुर्गियों का प्रजनन, मुर्गियों में बीमारियों की पहचान व रोकथाम, मार्केटिंग, वित्तीयन आदि से संबंधित कैरियर निर्माण के अवसर उपलब्ध है। **क्रमशः**

'गुरु शिखर से' (विविध विषयों का कॉलम)

भूप भागीरथ

स्वरूपसिंह जिंझनियाली

बीकानेर महाराजा सरदारसिंह के दत्तक पुत्र के रूप में छतरगढ़ के महाराजा लालसिंह के बड़े पुत्र डूंगरसिंह बीकानेर के शासक बने। परन्तु महाराजा डूंगरसिंह की अल्प आयु में मृत्यु हो जाने पर उनके छोटे भाई गंगासिंह केवल सात वर्ष की उम्र में 1887 ई. में बीकानेर के 21वें महाराजा के रूप में प्रतिष्ठित हुए। 1890-95 तक उन्होंने अजमेर के विख्यात मैयो कॉलेज में शिक्षा ग्रहण की। वे रौबदार व्यक्तित्व के धनी थे। बड़ी-बड़ी मूंछे, बुलंद आवाज और सामान्यत बीकानेरी भाषा में बात करने में गर्व महसूस करते थे। उत्कृष्ट अंग्रेजी भाषा को जानने, राजशाही वैभव, पार्टियां, लवाजमे में उनका कोई सानी नहीं था। परन्तु ठेठ देहाती अंदाज में बोलना, खाना एवं रहना उन्हें बहुत भाता था। तरूण महाराजा के शासन के प्रारम्भ में 1898 भयंकर छप्पनिया अकाल पड़ा। असंख्य मनुष्य एवं पशु काल का ग्रास बने। महाराजा ने सेठ साहुकारों के सहयोग एवं अपने अल्प खजाने से राहत कार्य चलाए तथा प्रजा का दुख-दर्द जानने के लिए ऊंट व घोड़ों पर बैठकर सम्पूर्ण रियासत का भ्रमण किया। वे बड़े शकुन विचारी थे तथा मां करणी का बड़ा इष्ट रखते थे। वे आधुनिक युग के सर्वाधिक उत्कृष्ट शासक बहादुर सैनिक, महान निर्माता एवं प्रसिद्ध राजनेता थे। उनके राज्यकाल में बीकानेर रियासत का आश्चर्यजनक कायाकल्प हुआ।

बालक एवं बालिका शिक्षा के लिए उन्होंने पृथक-पृथक स्कूल खोले। विधानसभा, म्युनिसिपल बोर्ड, पोस्टल सेवा, 1891 में रेल्वे एवं नाल का हवाई अड्डा उन्होंने प्रारम्भ किया। उनकी सबसे बड़ी उपलब्धि सतलज नदी से मरू भागीरथी के रूप में गंग नहर को लाना था। वे इस कार्य के लिए आधुनिक भागीरथ माने जाते हैं। पं. मदन मोहन मालवीय द्वारा बनाए बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय में उन्होंने खूब सहयोग किया। वे इस शिक्षा मंदिर के प्रथम कुलाधिपति भी रहे। वे एक कुशल भवन निर्माता भी थे। बीकानेर का भव्य राजप्रासाद लालगढ पैलेस एवं उसके भीतर की लक्ष्मी निवास आदि इमारतें, जूनागढ़ किले का नवीनीकरण, गजनेर लैक पैलेस एवं शिकारगढ़, कोडमदेसर लैक पर बने भवन, हनुमानगढ़ एवं सूरतगढ़ के शिकार भवन, दिल्ली, मुम्बई (देवी भवन) एवं माउंट आबू के प्रशासनिक एवं आराम कोठियां, मैयो कॉलेज अजमेर का बीकानेर हाऊस व बीकानेर पैवेलियन तथा ग्राउण्ड, बनारस विश्वविद्यालय का बीकानेर भवन, बीकानेर का प्रिंस विजयसिंह मैमोरियल अस्पताल वर्तमान का पशु चिकित्सा महाविद्यालय (विजय भवन) कोर्ट कचहरी, बगीचे, डूंगर महाविद्यालय, गंगा थियेटर, कोलायत का कपिल मुनि सागर, देशनोक एवं रामदेवरा के मंदिरों का जीर्णोद्धार आदि उनकी उत्कृष्ट निर्माण रूचि का परिचायक है।

वे एक उच्च दर्जे के सैनिक व सेनानायक थे। वे प्रथम भारतीय राजा थे जिन्हें ब्रिटिश हुकुमत ने पूर्ण जनरल का औहदा दिया था। उनके द्वारा गठित ऊंट सेना जो विश्व में पहली ऊंट सेना थी, गंगा रिसाला के नाम से प्रसिद्ध है। जिसका आजादी के बाद 13 ग्रिनेडियर एवं सीमा सुरक्षा बल के रूप में भारत की सेना में समायोजन कर दिया गया। महाराजा ने गंगा रिसाला के साथ 1900 में चीन में, 1914 में सोमालिया एवं स्वेज नहर क्षेत्र में तथा प्रथम विश्व युद्ध में तुर्क सेनाओं के विरुद्ध स्वयं नेतृत्व किया। भारत भर के राजाओं के संगठन चैम्बर्स ऑफ प्रिंसेज के वे पहले कुलाधिपति (1921-26) रहे। प्रथम विश्व युद्ध के समय वे इंम्पिरियल वार केबिनेट का हिस्सा थे और युद्धोपरान्त संधि (ट्रीटी ऑफ वार्सेल्स) पर अमेरिका के राष्ट्रपति विल्सन एवं ब्रिटेन प्रधानमंत्री लायड जार्ज के साथ हस्ताक्षर करने वाले अकेले भारतीय थे। 1924 के लीग ऑफ नेशन्स के प्रतिनिधि मण्डल के अग्रणी नेता थे। 1930 में हुए प्रथम गोल मेज सम्मेलन (राउण्ड टेबल कांफ्रेंस) जो इंगलैण्ड की संसद के हाऊस ऑफ लार्डस में हुआ था, में सम्मिलित थे। दूसरे गोलमेज सम्मेलन में महात्मा गांधी को लंदन भेजने का आग्रह एवं सहयोग उन्हीं का था। उस समय के राष्ट्रीय आंदोलन के नेताओं गोपालकृष्ण गोखले, सर तेज बहादुर सप्रू, पं. मदन मोहन मालवीय, महात्मा गांधी, सत्येन्द्र सिन्हा आदि से उनके व्यक्तिगत संबंध रहे।

द्वितीय विश्व युद्ध में भी महाराजा ने अपने पुत्र शार्दुलसिंह के नेतृत्व में अपनी सेना को ईरान मध्य पूर्व एवं बर्मा में भेजा था। 1937 में महाराजा गंगासिंह ने अपने राज्यकाल की स्वर्ण जयंती भारत के वायसराय सहित अनेक रियासतों के शासकों, अपनी प्रजा के मध्य भव्य रूप से बीकानेर में मनाई। अंग्रेज सरकार ने उन्हें अनेकों पदवियों एवं मेडल से सम्मानित किया। ओक्सफोर्ड विश्वविद्यालय ने उन्हें डीसीएल केम्ब्रिज, एडिनबर्ग तथा बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय ने उन्हें एलएलडी की मादन उपाधियों से सम्मानित किया। भागीरथ भूप महाराजा गंगासिंह का 1943 में मुम्बई में निधन हो गया। जिन्होंने तपती बालू व बंजर धरती पर हिमालय का पानी लाकर उसे हरा भरा बना लोगों का जीवन ही बदल दिया।

देशभर में उत्साह से मनाई संघ के संस्थापक की जयन्ती

रेलुवी (बनास कांठा)

चित्तौड़गढ़

(पृष्ठ एक का शेष)

इसी प्रकार चित्तौड़गढ़ स्थित भूपाल राजपूत छात्रावास में संघ के संचालन प्रमुख लक्ष्मण सिंह बेण्याकाबास के सान्निध्य में 27 जनवरी को जयन्ती समारोह का आयोजन किया गया। कार्यक्रम को संबोधित करते हुए संचालन प्रमुख जी ने कहा कि तनसिंह जी ने संघ की स्थापना गीता को आधार बनाकर की है। गीता में भगवान कृष्ण द्वारा वर्णित सातों गुणों को जीवन में उतारकर ही हम सच्चे क्षत्रिय बन सकते हैं। यह निरन्तर व नियमित साधना से ही संभव है और इसी का अभ्यास संघ की शाखाओं व शिविरों में करवाया जाता है। कार्यक्रम को जौहर स्मृति संस्थान के अध्यक्ष तख्त सिंह फाचर, लोकेन्द्र सिंह ज्ञानगढ़, मीना कंवर चाकूडा, नरपतसिंह भाटी, देवेन्द्र सिंह आसीन्द ने भी संबोधित किया। संघ के केंद्रीय कार्यकारी गंगा सिंह साजियाली के साथ लालसिंह भाटी, गजेन्द्रसिंह, अनिरुद्ध सिंह भाटी, धनसिंह राठौड़ आदि अनेकों गणमान्य समाजबंधु भी कार्यक्रम में उपस्थित रहे।

उत्तरप्रदेश के बिजनौर जिले के मोरना में स्थित महाराजा मुकुट सिंह शेखावत संस्थान के प्रांगण में 27 जनवरी को पूज्य तनसिंह जी की जयन्ती वरिष्ठ स्वयंसेवक दीप सिंह बेण्याकाबास के सान्निध्य में मनाई गई। उन्होंने कार्यक्रम को संबोधित करते हुए कहा कि हम अपनेपन को भूलते जा रहे हैं। संघ उसी अपनेपन को, प्रेम को समाज में स्थापित करने का कार्य कर रहा है। क्योंकि प्रेम और अपनत्व ही संगठन का आधार है इसीलिए तनसिंह जी ने अपने स्नेह, प्रेम और अपनत्व से संघ को सींचा है। दिल्ली प्रान्त की शास्त्रीनगर व घामड़ोज शाखा में भी 25 जनवरी को पूज्य तनसिंह जी की जयन्ती मनाई गई।

गुजरात में अहमदाबाद ग्राम्य प्रान्त में काणेटी गांव की रात्रि शाखा में पूज्य श्री की जयन्ती मनाई गई जिसमें संभाग प्रमुख दीवानसिंह काणेटी उपस्थित रहे। साणंद की मंगलतीर्थ सोसाइटी में भी 27 जनवरी को जयन्ती मनाई गई जिसमें दिग्विजयसिंह पलवाड़ा उपस्थित रहे। मोरचंद में भी जयन्ती कार्यक्रम का आयोजन हुआ, जिसमें वरिष्ठ स्वयंसेवक छनुभा उपस्थित रहे। नारी में जयन्ती कार्यक्रम खोडियार प्रांतप्रमुख मंगलसिंह धोलेरा की उपस्थिति में सम्पन्न हुआ। अवाणिया में केन्द्रीय कार्यकारी महेंद्रसिंह पांची की उपस्थिति में कार्यक्रम सम्पन्न हुआ। महेसाणा के डाभला में आयोजित जयन्ती समारोह में संभागप्रमुख विक्रमसिंह कमाणा उपस्थित रहे। इसके अतिरिक्त धोलेरा, गोंडल तथा मोटी चंदुर में भी कार्यक्रम आयोजित हुए।

मुम्बई प्रान्त की शाखाओं द्वारा पूज्य तनसिंह जी की जयन्ती मंडल स्तर पर मनाई गई। दक्षिण मुम्बई मंडल में तनेराज शाखा द्वारा गिरगांव चौपाटी पर कार्यक्रम रखा गया, जिसमें सैकड़ो की संख्या में स्वयंसेवक सम्मिलित हुए। कार्यक्रम का शुभारंभ हल्देश्वर मठ पीपलून के भीमगिरी जी महाराज द्वारा दीप प्रज्ज्वलन के साथ किया गया। तत्पश्चात पूज्य श्री की तस्वीर पर पुष्पांजलि अर्पित की गई। इसी प्रकार उत्तर मुम्बई मण्डल की शिवाजी शाखा तथा हार्बर मण्डल की कल्ला रायमलोत शाखा कल्याण में कार्यक्रम रखा गया।

इसके अतिरिक्त दुबई में भी तनसिंह जी की जयन्ती मनाई गई, जिसमें वहाँ रहने वाले समाजबंधुओं ने पूज्य श्री को श्रद्धासुमन अर्पित किए।

पाली प्रान्त के अंतर्गत रानी स्थित आदर्श विद्या मन्दिर के प्रांगण में 27 जनवरी को पूज्य श्री की जयन्ती समारोह पूर्वक मनाई गई। समारोह को संबोधित करते हुए केन्द्रीय कार्यकारी प्रेमसिंह रणधा ने कहा कि हमारे समाज में समय.समय पर अनेकों महापुरुष हुए हैं जिन्होंने अपने जीवन द्वारा सम्पूर्ण समाज को धर्म के मार्ग पर चलने की प्रेरणा दी। ऐसे ही महापुरुष थे पूज्य तनसिंह जी, जिन्होनें हमें क्षत्रिय युवक संघ जैसा अनूठा मार्ग दिया। उनके बताए मार्ग पर निष्ठापूर्वक चलना ही उनके प्रति सच्ची श्रद्धांजलि होगी। कार्यक्रम को संबोधित करते हुए लक्ष्मण सिंह रायरा ने पूज्य श्री के जीवन के संस्मरण सुनाए। जालोर संभाग के सिरोही प्रान्त के देलदर गांव में आयोजित जयन्ती कार्यक्रम में संभाग प्रमुख अर्जुन सिंह देलदरी ने कहा कि संघ हमें स्वधर्म पालन के मार्ग पर प्रवृत्त करने का कार्य कर रहा है। इस कार्य की सफलता में ही हमारे जीवन की सार्थकता निहित है। कार्यक्रम को डॉ. गणपतसिंह सराणा ने भी संबोधित किया। जालोर संभाग के अन्तर्गत ही सायला स्थित जलंधरनाथ राजपूत छात्रावास में 25 जनवरी को जयन्ती कार्यक्रम आयोजित हुआ। प्रांत प्रमुख गणपत सिंह भंवराणी ने कार्यक्रम को संबोधित करते हुए कहा कि तनसिंह जी की साधारणता में ही उनकी असाधारणता निहित थी। अपनी समस्त प्रतिभाओं को समाज की संपत्ति बनाकर वे हमारी तरह साधारण बने रहे इसीलिए आज वे हम सभी के प्रेरणास्रोत हैं। कार्यक्रम को गणपत सिंह बालोत तथा भवानी सिंह ने भी संबोधित किया। इस दौरान युवक कांग्रेस कार्यकारी अध्यक्ष पन्नेसिंह पोषाणा, कांग्रेस किसान प्रकोष्ठ ब्लॉक अध्यक्ष महेन्द्रसिंह पोषाणा, दलपत सिंह तूरा, इन्द्रसिंह बोरवाड़ा, हीर सिंह सिराणा, नाहर सिंह जाखड़ी सहित अनेकों समाजबंधु उपस्थित रहे।

जालोर संभाग में जसवंतपुरा स्थित नृपालदेव राजपूत छात्रावास में भी जयन्ती कार्यक्रम का आयोजन हुआ, जिसमें प्रांतप्रमुख नाहरसिंह जाखड़ी उपस्थित रहे। इसी प्रकार सांचौर-रानीवाड़ा प्रान्त द्वारा सांचौर स्थित श्री राव बल्लूजी छात्रावास में जयन्ती कार्यक्रम का आयोजन हुआ। पाली के धींगाणा गांव की महिला शाखा द्वारा भी पूज्य श्री की जयन्ती मनाई गई, जिसमें प्रांतप्रमुख महोब्बत सिंह धींगाणा उपस्थित रहे।

जोधपुर संभाग में जोधपुर शहर स्थित संघ कार्यालय 'तनायन' में 25 जनवरी को संघ के विद्यार्थी प्रकोष्ठ के तत्वावधान में जयन्ती मनाई गई। गणेश वंदना व प्रार्थना के पश्चात पूज्य श्री की तस्वीर पर पुष्पांजलि अर्पित की गई। कार्यक्रम में केंद्रीय कार्यकारी प्रेमसिंह रणधा व रेवन्त सिंह पाटोदा व प्रांतप्रमुख उम्मेदसिंह सेतरावा उपस्थित रहे। तनायन के अतिरिक्त सरदार होस्टल व हनुवंत होस्टल के विद्यार्थी भी कार्यक्रम में सम्मिलित हुए। जोधपुर संभाग में ही बेलवा स्थित श्री मंगल बाल उच्च माध्यमिक विद्यालय में तनसिंह जी की जयन्ती मनाई गई। बेलवा, राजगढ़ लवाटन, सेखाला, देवातु, लोड़ता में बालक व बालिका शाखाओं में भी जयन्ती मनाई गई। इसी प्रकार संभाग के भोपालगढ़ प्रान्त के रूदिया गांव में भी जयन्ती समारोह रखा गया जिसमें प्रांत प्रमुख भरतपाल सिंह दासपां तथा महेशपाल सिंह, महेंद्र सिंह नानण, मानवेन्द्र सिंह केरालिया उपस्थित रहे। राजूसिंह रूदिया ने व्यवस्था का जिम्मा सम्भाला। जोधपुर के नांदड़ी में भी 27 जनवरी को पूज्य श्री की जयंती मनाई गई। तिंवरी में भी 25 जनवरी को पूज्य श्री की जयन्ती मनाई गई।

(शेष पृष्ठ 7 पर)

बिजनौर

मुंबई

संपादकीय

'लड़ाई जारी रखें'

भगवान श्रीकृष्ण ने गीता के अठारहवें अध्याय के तिंयालिसवें श्लोक में क्षत्रिय के सात स्वाभाविक गुण बताए। उनमें से दो 'शौर्य' एवं 'युद्ध से पलायन न करना' प्रत्यक्ष रूप से लड़ाई से संबद्ध लगते हैं। इसलिए सामान्यतः हम मानते हैं कि क्षत्रिय का काम लड़ना है। उसे युद्ध जारी ही रखना चाहिए। सदियों से हम यह बात सुनते और समझते आए हैं इसलिए लड़ना हमारे स्वभाव में रच बस गया है। हमारे स्वभाव की इसी विशेषता के कारण हम सदैव लड़ते आए हैं और लड़ना हमारा सहज स्वभाव बन गया। इसी स्वभाववश हम आज भी लड़ने के उतारू रहते हैं। आज भी हम लड़ना जारी रखे हुए है और यदि हम भगवान श्रीकृष्णोक्त गीता का अनुपालन करें तो हमें लड़ना जारी ही रखना चाहिए। यदि हम आज भी लड़ते हैं तो कुछ गलत नहीं करते, हमें लड़ना ही चाहिए। लेकिन इतना सा समझ लेना चाहिए कि लड़ना किससे है, लड़ना कैसे है?

लड़ना किससे है इसके बारे में तो हमारी महान पूर्वज परम्परा एवं महापुरुषों का स्पष्ट आदेश है कि क्षत्रिय को अमृत तत्वों की रक्षार्थ लड़ना चाहिए। ऐसे में 'लड़ना किससे हैं' इस प्रश्न का उत्तर खोजते समय हमें यह विचार करना चाहिए कि क्या मेरी लड़ाई अमृत तत्वों की रक्षा के लिए है। यदि इस प्रश्न का उत्तर हां में आता है तो हमें लड़ाई जारी रखनी चाहिए। दूसरा प्रश्न है कि लड़ाई कैसे लड़ें? लड़ाई लड़ने के तरीके समय के अनुसार बदलते रहते हैं। हमारे साथ यह विडंबना रही कि यहां हम थोड़े पिछड़ जाते हैं। समय के अनुसार बदलते साधनों को अपनाने में हम थोड़ी देरी कर देते हैं। भगवान श्रीकृष्ण द्वारा बताए गए सात गुणों में एक गुण दक्षता भी है। दक्षता में अनेक प्रकार की दक्षताएं शामिल हैं और उन्हीं में से एक है युगानुकूल साधनों के उपयोग में दक्ष बनना। नानाविध दक्षताओं में से एक इस दक्षता में हम पिछड़ते रहे हैं ऐसा हमारा इतिहास बताता है। मध्यकालीन इतिहास को देखें तो हमने बारूदी हथियारों का मुकाबला तलवारों से किया क्योंकि हम जमाने के साथ इस पक्ष में अद्यतन नहीं हो पाए थे। आजादी के आंदोलन के समय सत्याग्रह एक महत्त्वपूर्ण हथियार बन चुका था और उसी के बल पर देश के भाग्य विधाता बदल गए लेकिन हमने इस साधन के प्रति उपेक्षा ही बरती। आजादी के बाद नई व्यवस्था पनपी, नई व्यवस्था ने लड़ाई के जो हथियार दिए, नया कानून लागू हुआ, उस कानून के अनुसार नए प्रकार के साधन उपलब्ध हुए, नई प्रकार की लड़ाई अस्तित्व में आई और हम क्यों कि उसके प्रति उपेक्षा भाव लिए हुए थे इसलिए इसका भली प्रकार उपयोग नहीं कर पाए। ऐसे में यहां भी यह बात उभर कर आती है कि लड़ना तो जारी रखना है लेकिन कैसे लड़ना है इसके लिए समयानुसार अद्यतन होते रहना है। दुर्भाग्य का विषय यह है कि जब संसार सड़कों पर लड़ रहा था तब हम उसकी उपेक्षा कर रहे थे और आज जब कागज की लड़ाई चल रही है, विचारों की लड़ाई चल रही है तब हम सड़क पर लड़ने को उद्यत हो रहे हैं इसलिए बात फिर यही निकल कर आती है कि लड़ाई जारी रखनी है, लड़ने से पीछे नहीं हटना है, लड़ना हमारा स्वभाव है, उससे विरत नहीं होना है लेकिन लड़ना किससे है, लड़ना कैसे है यह सदैव ध्यान रखना है। लेकिन इन सबके बीच एक प्रश्न फिर से उपेक्षित रह रहा है, वह है अपने आप से लड़ाई। पहला प्रश्न जिसका उत्तर हमने आलेख के प्रारम्भ में खोजा कि हमें अमृत तत्व की रक्षा के लिए लड़ना है। विष के विनाश के लिए लड़ना है। लेकिन यही प्रश्न एक दूसरा प्रश्नोत्तर खड़ा करता है कि अमृत की रक्षा अमृत ही कर सकता है। विष का विनाश विष से संभव नहीं है। इसलिए संसार के विष से लड़ने के लिए अपने विष को मिटाना पड़ेगा। संसार के अमृत को बचाने के लिए स्वयं अमृत मय बनना पड़ेगा। यदि ऐसा नहीं करेंगे तो हम रावण की तरह लड़ने लगेंगे। कंस की तरह लड़ने लगेंगे। दुर्योधन की तरह लड़ने लगेंगे। जिसके अंतर में विष व्याप्त हो वह अमृत की स्थापना नहीं कर सकता इसलिए जैसा हमने ऊपर चर्चा की कि हमें पहले अपने आप से लड़ना है। अपने अंतर में बैठे विष और अमृत में संघर्ष का आह्वान करना है। यदि हम ऐसा नहीं कर पाए तो आधुनिकतम साधनों को अपनाते हुए भी हम लड़ते तो रहेंगे लेकिन क्षत्रिय की तरह नहीं बल्कि राक्षस की तरह लड़ने लगेंगे। इसलिए हम सब को हमारे लड़ने के स्वभाव को देखते हुए लड़ाई जारी रखनी है। अपने आपसे लड़ाई जारी रखनी है। अपने आसपास व्याप्त विष तत्वों से लड़ाई जारी रखनी है। वर्तमान जमाने के साधन विचार की लड़ाई जारी रखनी है। कागज की लड़ाई जारी रखनी है और इसी लड़ाई के माध्यम से हम क्षत्रियत्व की ओर बढ़ पाएंगे। श्री क्षत्रिय युवक संघ हम सबमें इसी लड़ाई को जागृत रखना चाहता है और उसी प्रक्रिया में हम सबको झौंककर परमेश्वर के मंगलमय विधान में सहायक बन रहा है।

खरी-खरी

'विचारों की स्वतंत्रता, भिन्नता और एकता'

विचार एक प्रबल शक्ति है। आधुनिक युग के सापेक्ष में कहे कि विचार ही शक्ति है तो भी अतिशयोक्ति नहीं होगी? क्योंकि विचार शक्ति है इसलिए विचार क्रांति की अवधारणा पनपी। आज के युग में विचार क्रांति ही सबसे बड़ी क्रांति है। विचारों में परिवर्तन ही व्यक्ति एवं व्यवस्था में आमूल चूल परिवर्तन करता है और आमूल चूल परिवर्तन ही तो क्रांति कहलाता है। इस प्रकार विचार वर्तमान का महत्वपूर्ण साधन सिद्ध हुआ है। यदि निकट भूतकाल को देखें तो मार्क्स ने एक विचार ही दिया था जिसके प्रसार ने एक काल विशेष में दुनियां में उथल-पुथल मचाई। गांधी एक विचार दर्शन का ही तो नाम है जिसने एक व्यक्ति को राष्ट्र के पिता की पदवी दे दी। राष्ट्रवाद भी एक विचार ही है जिसके अतिरेक ने दो-दो विश्व युद्धों की नींव रखी। इसी राष्ट्रवाद के विचार की आंधी ने अरब से प्रारम्भ हुई बर्बरता को भारत तक पहुंचा दिया था। इस प्रकार स्पष्ट है कि शेष सभी साधन तो विचार नामक शक्ति के साधन ही है, मूल साधन तो विचार ही है। विचार की इसी शक्ति का हम तीन तरह से विश्लेषण करने का प्रयास करेंगे। पहली बात हम विचार स्वतंत्रता की करें तो इसका अर्थ है कि हर व्यक्ति को अपनी विचार शक्ति को जागृत कर अपनी स्वतंत्र विचार शीलता का अनुकरण करना चाहिए। कभी भी किसी की विचार शीलता को किसी का गुलाम नहीं बनाया जाना चाहिए बल्कि हर व्यक्ति को अपने विवेक का इस्तेमाल कर उचित अनुचित विचार को अपनी जीवन यात्रा का साधन बनाने की स्वतंत्रता होनी चाहिए। उसकी विचार शक्ति को उन्नत करने के लिए यथा योग्य सहायता तो की जानी चाहिए लेकिन फिर भी निर्णय लेने के लिए उसे स्वतंत्र छोड़ना चाहिए। एक बार जिस निर्णय को विचार शक्ति ने अपने स्वतंत्र चिंतन एवं विवेक द्वारा स्वीकार कर लिया हो उसे फिर सर्वात्मना स्वीकार करना चाहिए। विचार स्वतंत्रता के नाम पर नित नए विचारों की ओर आकर्षित होना विचार स्वतंत्रता के नाम पर वैचारिक व्यभिचार ही कहा जा सकता है।

दूसरी अवधारणा विचारों की भिन्नता की है। यह आधुनिक व्यक्तिवाद की उपज है। वैचारिक स्वतंत्रता के नाम पर वैचारिक भिन्नता का पोषण करना भी उसका दुरुपयोग ही है। भिन्नता कभी भी एकता की पोषक नहीं हो सकती। भिन्नता बांटने का काम करती है। यह इकाई को इकाई ही बने रहने को प्रोत्साहित करती है कभी उसे योग नहीं करने देती। इकाई के इकाई बने रहने में संपूर्णता नहीं है बल्कि संपूर्णता तो मिलन में ही घटित होती है। पश्चिम में पनपे प्रजातंत्र के मूल में वैचारिक भिन्नता है। इसीलिए पूज्य तनसिंह जी ने इस प्रजातंत्र को असंगठितों का संगठन बताते हुए लिखा है कि अनेकता के बिना प्रजातंत्र चल ही नहीं सकता। उसे जीवित रहने के लिए हलाहल विष तैयार करना पड़ता है। वे लिखते हैं कि प्रजातंत्र असंगठितों का संगठन है जो सदैव परस्पर विरोधी रहने में किसी हेतु की सिद्धि अनुभव करते हैं। उनके अनुसार संगठन के लिए प्रजातंत्रीय अनेक्य घातक होता है। पूज्य तनसिंह जी के उक्त कथन को समझें तो स्पष्ट होता है कि एकता के लिए आधुनिक लोकतांत्रिक प्रणाली की विचार भिन्नता घातक है। शासन प्रणाली के रूप में हो सकता है लोकतांत्रिक प्रणाली अधिकतम भागीदारी के नारे के साथ ठीक हो लेकिन लोकतंत्र की विचार भिन्नता संगठन के लिए तो घातक ही है और इसीलिए किसी भी एकता के लिए विचारों की एकता प्रथम आवश्यकता है। जब तक विचारों की एकता नहीं होगी हम संगठन के नाम पर स्वयं को धोखा ही देंगे। इसीलिए वैचारिक भिन्नता को बरकरार रखते हुए संगठन की बात करने वाले एक प्रकार से स्वयं को धोखा ही देते हैं। संगठन का तो पहला ही सूत्र है, 'हो विचार समान सबके।' जब तक विचारों की भिन्नता को न्यूनतम कर समानता की ओर अग्रसर नहीं होंगे तब तक संगठन हमारे लिए आकाश कुसुम ही बना रहेगा। आधुनिक समझदार(?) लोग विचार स्वातंत्र्य की पश्चिमी अवधारणा के अनुरूप वैचारिक भिन्नता को पोषित कर संगठन की कल्पना करते हैं जो वास्तव में एक दुरुह कल्पना ही है। विचार स्वातंत्र्य का वास्तविक अर्थ वैचारिक भिन्नता का पोषण न होकर स्वतंत्र चिंतन धारा द्वारा किसी विचार का सांगों पांग आकलन कर उसे अपने जीवन का मूल विचार बनाकर उसमें जीवन यात्रा को निशेःष करना है। ऐसी विचार भिन्नता को पोषित कर नहीं बल्कि उसे उत्तरोत्तर न्यूनतम कर समानता के स्तर तक ले जाना है। ऐसा होने पर ही वैचारिक एकता घटित होती है और जैसा हमने प्रारम्भ में चर्चा की कि विचार आज के जमाने का प्रमुख साधन है। यदि हमारा सबका यह साधन एक दिशा विशेष में प्रवाहित हो योग को प्राप्त होता है, एकता को प्राप्त होता है तब ही हम अजेय संगठित शक्ति की ओर प्रवाहमान हो पाते हैं। श्री क्षत्रिय युवक संघ विचार स्वातंत्र्य की ऐसी ही यात्रा की विश्राम स्थली है। आएं हम सब हमारे विचारों को इस स्थली की ओर प्रवाहित करने के लिए उनमें व्याप्त भिन्नता को न्यूनतम करने की ओर अग्रसर होवें।

डॉ. हरिसिंह रामपुरिया की पुण्यतिथि

अलख नयन मंदिर, एयरपोर्ट रोड उदयपुर में 26 जनवरी को संघ के वरिष्ठ स्वयंसेवक एवं प्रसिद्ध नेत्र चिकित्सक डॉ. हरिसिंह रामपुरिया की प्रथम पुण्यतिथि मनाई गई। डॉ. साहब के जीवन चरित्र की चर्चा करते हुए स्वामी ज्ञानानंद जी ने शराब व मांसाहार से दूर रहने एवं गायत्री व सूर्य की उपासना की बात कही। भजनों की मनोनुकूल प्रस्तुतियां भी दी गईं।

पुष्पेन्द्रा कंवर की पुण्यतिथि मनाई

जालोर के मोरूआ गांव निवासी पुष्पेन्द्रा कंवर की स्मृति में उनकी द्वितीय पुण्यतिथि पर पुष्पेन्द्रा कंवर स्मृति संस्थान एवं संघ की मोरूआ बालिका शाखा द्वारा कार्यक्रम रखा गया जिसमें संस्थान के संरक्षक हणवंतसिंह मोरूआ, सुमन कंवर, खुश्बु कंवर, सूर्यदेवसिंह मादड़ी, सवाईसिंह मोरूआ, राजवीरसिंह मोरूआ, गोपालसिंह मोरूआ आदि ने अपने विचार व्यक्त किए। संचालन वीर बहादुरसिंह असाड़ा ने किया।

पाली में मनाई पुण्यतिथि

पाली के वीर दुर्गादास राजपूत छात्रावास व महाराणा प्रताप जयंती आयोजन समिति के तत्वावधान में 19 जनवरी को महाराणा प्रताप की पुण्यतिथि मनाई गई। इस अवसर पर छात्रावास के छात्रों एवं आयोजन समिति के सदस्यों ने विश्ववंद्य प्रताप को श्रद्धांजलि अर्पित की एवं उनके आदर्शों को अपनाने की आवश्यकता जताई।

औंकारसिंह निराधणु का देहावसान

संघ के प्रारंभिक काल में मई 1947 में लगे बीकानेर उ.प्र.शि. में संघ से जुड़े वरिष्ठ स्वयंसेवक **औंकारसिंह निराधणु** का 20 जनवरी को देहावसान हो गया। आप कॉपरेटिव बैंक में ओडिटर थे। पथप्रेरक परिवार दिवंगत आत्मा की शांति के लिए परमेश्वर से प्रार्थना करता है एवं शोक संतप्त परिवारजनों के प्रति हार्दिक संवेदना व्यक्त करता है।

औंकारसिंह निराधणु

सायरसिंह मऊ का देहावसान

संघ के वयोवृद्ध स्वयंसेवक **सायरसिंह मऊ** का 13 जनवरी को देहावसान हो गया। संघ के प्रारंभिक दिनों में 1951 में जोधपुर में हुए प्रा.प्र.शि. से अपनी संघ यात्रा प्रारंभ करने वाले सायरसिंह सेवानिवृत प्रधानाध्यापक थे। पथप्रेरक परिवार दिवंगत आत्मा की शांति के लिए परमेश्वर से प्रार्थना करता है एवं शोक संतप्त परिवारजनों के प्रति हार्दिक संवेदना व्यक्त करता है।

सायरसिंह मऊ

बिजावा बंधुओं को पितृशोक

संघ के स्वयंसेवक तनसिंह बिजावा एवं बलवीरसिंह बिजावा के पिता **रणमलसिंह** का 92 वर्ष की उम्र में 25 जनवरी को देहावसान हो गया। पथप्रेरक परिवार दिवंगत आत्मा की शांति के लिए परमेश्वर से प्रार्थना करता है एवं शोक संतप्त परिवारजनों के प्रति हार्दिक संवेदना व्यक्त करता है।

रणमलसिंह

उर्मिला कंवर भाटी सम्मानित

पूंगल (बीकानेर) कस्बे के बलवंतसिंह की पुत्री उर्मिला कंवर का दसवीं कक्षा में उपखण्ड स्तर पर प्रथम आने पर 24 जनवरी को बालिका दिवस पर जिला कलक्टर बीकानेर द्वारा पांच हजार रुपए का चैक, प्रशस्ति पत्र एवं स्मृति चिह्न देकर सम्मान किया गया।

नशा मुक्त विवाह करने पर सम्मान

नाथद्वारा के केरिंग जी का खेड़ा में 23 जनवरी को निर्भया नवजीवन ज्योति समूह की ओर से शराब, मांस व अनावश्यक खर्च से मुक्त शादी करने पर दुल्हन पक्ष के भंवरसिंह व दुल्हा पक्ष के वनसिंह चौहान का बारात सहित सम्मान किया गया।

विवाह के अवसर पर शिक्षा कोष में भेंट

जालोर जिले के पाणवां गांव निवासी प्रदीपसिंह पुत्र महावीरसिंह मण्डलावत एवं भीलवाड़ा के बदनौर निवासी कीर्ति कंवर पुत्री ललित सिंह के विवाह के अवसर पर वर एवं वधु पक्ष ने 51-51 हजार रुपए पूर्व सांसद नारायणसिंह माणकलाव द्वारा स्थापित राजपूत शिक्षा कोष में भेंट किए। साथ ही 51-51 हजार रुपए पूर्व सैनिकों के परिवारों की सहायतार्थ जिला सैनिक कल्याण कार्यालय पाली को भेंट कर अनूठी पहल की।

शाखाओं के लिए सम्पर्क

बालोतरा प्रांत में शाखाओं से सम्पर्क के लिए चार दिन तक प्रांत प्रमुख सहित स्वयंसेवकों ने अभियान चलाया। 11 जनवरी को सायं 4 बजे बुड़ीवाड़ा में बुड़ीवाड़ा एवं जागसा शाखा के लिए सम्पर्क किया। 12 जनवरी को टापरा शाखा में सम्पर्क किया। 13 जनवरी को मल्लीनाथ शिक्षण संस्थान सिणधरी में सिणधरी मंडल की शाखाओं को लेकर चर्चा की गई। 14 जनवरी को नागाणाराय छात्रावास एवं आसाड़ा गांव में सम्पर्क किया। सभी स्थानों पर शाखा लगाने हेतु दायित्व तय किए गए एवं शाखा में होने वाले कार्यक्रमों को लेकर चर्चा की गई।

जालोर की संभागीय बैठक संपन्न

संघ के जालोर संभाग की संभागीय बैठक 19 जनवरी को संभाग प्रमुख अर्जुनसिंह देलदरी के आवास पर केन्द्रीय कार्यकारी प्रेमसिंह रणधा के सानिध्य में संपन्न हुई। बैठक में आगामी उच्च प्रशिक्षण शिविर तक संभाग में संघ कार्य की कार्य योजना बनाई गई। इस सत्र में पूरे संभाग में शाखाओं की संख्या 100 के पार पहुंचाने का लक्ष्य तय किया गया। उच्च प्रशिक्षण शिविर में जाने योग्य स्वयंसेवकों की सूची बनाने एवं उनसे सतत् सम्पर्क की योजना बनाई गई। प्रत्येक प्रांत में पूज्य तनसिंह की जयंती मनाने का भी लक्ष्य लिया गया। संघशक्ति, पथप्रेरक की ग्राहक सदस्यता के लिए चलाए जा रहे विचार क्रांति अभियान की समीक्षा की गई एवं इसे जारी रखने के लिए आवश्यक सहयोग को लेकर चर्चा की गई। समाज में संघ के सहयोगियों को संघ के दर्शन की क्रियात्मक जानकारी देने के लिए ऐसे लोगों का शिविर आयोजित करने को लेकर भी चर्चा की गई।

धर्मशास्त्र 'गीता'

परमहंस स्वामी श्री अड़गड़ानंद जरी महाराज

गतांक से आगे...

रेल की पटरियों से होकर जहां सड़क गुजरती है, वहां फाटक पर एक सज्जन की नौकरी गैटमैन के रूप में लग गई। गाड़ी आने के समय फाटक बंद करना, पुनः खोलना, गाड़ी चालक को हरी-लाल झण्डी आवश्यकतानुसार दिखाना उनका दायित्व था। एक दिन उनके समधी साहब वहां पहुंचे। पहली बार आए थे समधी साहब। रिश्तेदारी का मामला था। समधी साहब बोले, 'क्यों समधी जी। क्या छोटी सी नौकरी करते हो? एक-एक बालिश्त की दो फरकच्ची लेकर झण्डी इधर-उधर हिलाते रहते हो। देखो न। स्टेशन पर जो टिकट बांटता है एक टोकरी टिकट उसके पास रहता है। जो झाड़ू भी लगाता है, चार हाथ लम्बा झाड़ू रखता है।'

उस सज्जन ने कहा, 'नहीं समधी साहब। हमारी नौकरी छोटी नहीं, बहुत बड़ी है। इस झण्डी में बड़ी ताकत है। यह चलती हुई गाड़ी को भी रोक सकती है।' समधी साहब ने कहा, 'अजी छोड़िए भी। गाड़ी चलाता है इंजन, इंजन चलाता है ड्राइवर। वह अलग है। यह झण्डी कैसे रोकेगी?' हावड़ा मेल आ रही थी। द्रुतगामी ट्रेन। सौ-सवा सौ किलोमीटर प्रति घंटे की गति से दौड़ रही थी। गैटमैन ने हरी झण्डी दिखाई। गाड़ी ने और गति पकड़ी। अचानक गैटमैन हरी झण्डी फैंककर लाल झण्डी दिखाने लगा। एक सरदार जी ड्राइवर थे, उन्होंने आपातकालीन ब्रेक लगा दिया। दो-तीन डिब्बे पटरी से नीचे उतर गए। ऊपर की बर्थ पर आराम कर रहे लोग नीचे गिर पड़े। किसी का हाथ टूटा, किसी की कमर, किसी का दांत टूटा तो किसी का चश्मा फूटा। सुरक्षाकर्मी दौड़ पड़े। चालक भी गैटमैन के पास आ गया, पूछा- क्या मामला है? आगे नदी का पुल तो नहीं टूट गया? इतना घबड़ाकर संकेत क्यों दिया?

गैटमैन ने कहा, 'पुल तो सुरक्षित है। यह अपने समधी साहब आए हैं। इन्हें झण्डी की ताकत दिखाना था।' इतना सुनते ही यात्रियों ने गैटमैन और उनके समधी साहब को पीटना आरम्भ किया। उन्हें पटककर बहुत पिटाई की। सरदारजी ने भी दो लात लगाया। क्रेन आई, डिब्बों को पटरी पर रखा। गाड़ी पुनः चल पड़ी। दोनों समधी अस्पताल पहुंचाए गए। दो दिन पश्चात् दोनों को होश आया। गैटमैन ने कहा, 'क्यों समधी जी। देखा झण्डी की ताकत।' समधी साहब ने कहा, 'हां भाई। देख तो लिया। अब नहीं दिखाइएगा। इतनी मार खाने पर कितने दिन तुम जीवित रहोगे और कितने दिन मैं जीवित रह सकूंगा।' **'प्यादा से फरजी भयो टेढ़ो-टेढ़ो जाय।'**- शतरंज के खेल में अंत तक बचा हुआ सिपाही प्रधानमंत्री बनकर टेढ़ी चाल चलने लगता है। सत्ता का अहंकार व्यक्ति को पथभ्रष्ट कर देता है। मानसकार कहते हैं - **'जहां सुमति तहं सम्पति नाना। जहां कुमति तहं विपति निदाना।' (मानस, 5/39/6)** जहां सुबुद्धि है, एकता है, वहां सम्पत्ति की वर्षा होने लगती है और जहां कुबुद्धि है, ईर्ष्या और फूट है, विपत्ति का पहाड़ टूट पड़ता है। एक उद्योगपति से धन की देवी लक्ष्मी ने कहा, 'सेठ। कोई वरदान मांग लो। सेठ घबराया। वह बोला, माताजी। हमे सात दिनों का समय दें। मैं परिवार जनों से परामर्श कर लूं।' सेठ ने सबको बुलाया, परिस्थिति से अवगत करवाया- 'लक्ष्मीजी पूर्वजों के समय से हमारे घर में निवास करती आई हैं। अब वह एक वरदान देकर कहीं जाना चाहती हैं। मैं उनसे क्या मांगू।' उन्होंने कहा- 'जब लक्ष्मीजी ही प्रसन्न हैं तो कुछ भी मांगा जा सकता है।' किसी ने परामर्श दिया- सम्पूर्ण विश्व के गोदाम ले लीजिए। किसी का सुझाव था- स्वर्ण का व्यवसाय। हर देश में शोरूम। किसी ने कहा- चक्रवर्ती सम्राट भी कम नहीं होता।

सातवें दिन लक्ष्मी जी ने पुनः दर्शन दिया, बोली, 'वत्स। वरदान मांगो।' सेठ ने कहा- 'माताजी। सुझाव तो अनेकों आए किन्तु हमें रुचिकर प्रतीत नहीं होता। आप केवल इतनी कृपा करें कि हमारे परिवार में सदैव सुमति बनी रहे।' लक्ष्मी जी ने 'तथास्तु' कहा और अन्तर्धान हो गईं। आधा घण्टा भी नहीं हुआ कि लक्ष्मीजी पुनः लौट आईं। सेठ जी संभ्रम में खड़े हो गए। उन्होंने कहा, 'माताजी। क्या आप अपना कुछ भूल गईं या मुझसे ही कोई भूल हो गई? आप लौट कैसे पड़ीं?' लक्ष्मीजी ने कहा, 'बेटा। न तुमसे कोई भूल हुई है और न मैं ही कुछ भूली हूं। मैं कैसे जाऊं? तुमने तो प्रकारान्तर से मुझे ही मांग लिया। मेरे जाने का अर्थ है कि चतुर्दिक वैभव-सामग्री रहते हुए भी आप उसका उपयोग न कर सकें। भोजन का थाल आपके समक्ष हो किन्तु ग्रास मुख तक न पहुंचे। चार भाई हों तो चारों मुंह फुलाए चार दिशाओं को देखें, आपस में कभी सौहार्द्र न हो। मेरे जाने का अर्थ है- कुमति का आना। तुमने सुमति क्या मांगी, मुझे ही मांग लिया।' **'जहां सुमति तहं सम्पति नाना।'**

अतः आप सब गांव में, नगरों में, सर्वत्र भाई-भाई विभिन्न शरीर किन्तु एक प्राण बनकर जीना सीखें। 'श्रीमद्भगवद्गीता' आपको यही एकता देती है, शौर्य और पराक्रम देती है। यह लोक में समृद्ध जीवन और अभय पद की प्राप्ति कराती है। धर्मशास्त्र के रूप में 'गीता' अपनाएं। 'हनुमान चालीसा' और 'दुर्गा चालीसा' पढ़ने से काम नहीं चलेगा। एक कवि जी नेता चालीसा पढ़ते हैं। किस-किस की चालीसा पढ़ेंगे आप? जिस प्रभु के वरदहस्त के नीचे हम-आप जीना चाहते हैं, उन प्रभु के श्रीमुख की वाणी का सीधा प्रसारण 'श्रीमद् भगवद् गीता' आप लें, उसी के आलोक में सभी शास्त्रों को देखें तो हर महापुरुष की वाणी आपको एक मिलेगी। श्रीकृष्णोक्त 'श्रीमद्भगवद्गीता' संस्कृत में है। आज संस्कृत भाषा का प्रचलन हमारे जीवन में नहीं रहा। 'श्रीमद्भगवद्गीता' की यथावत् व्याख्या के लिए 'यर्थाथ गीता' का अनुशीलन करें।

।।ॐ।।

बैंगलूर बालिका प्राथमिक प्रशिक्षण शिविर सम्पन्न

श्री क्षत्रिय युवक संघ का बालिका प्राथमिक प्रशिक्षण शिविर वी.पी. सिंह के फार्म हाउस 'मगनम' ऐरिना, शारजापुर रोड़, बैंगलोर में 25 से 27 जनवरी के बीच संपन्न हुआ। शिविर प्रमुख लक्ष्मी कँवर खारड़ा ने स्वागत उद्बोधन में बताया कि आज के वातावरण में संस्कारों का कितना महत्व है। जहाँ पूरा संसार आधुनिकता और पाश्चात्य संस्कृति की ओर भाग रहा है वहाँ हमें आधुनिकता की दौड़ में अपने आप को शामिल करते हुए अपने संस्कारों को बचा कर अपने आप को उस धारा में चलाना है जिस पर हमारे पूर्वज चले थे। शिविर में राजस्थान से आकर रह रहे अप्रवासी राजस्थानियों की बलिकाओं ने प्रशिक्षण प्राप्त किया । बैंगलोर में पहले भी संघ के कई बालक शिविरों का आयोजन हो चुका है। बलिकाओं के लिए यह प्रथम प्रयास था जो बहुत ही सुंदर तरीके से सम्पन्न हुआ । शिविर में 27 जनवरी को पूज्य श्री तनसिंहजी की जयंती मनाई गई जिसमें कई राजस्थानी परिवारों के साथ-साथ स्थानीय राजपूत परिवारों ने भी भाग लिया। बृजराज सिंह खारडा ने कार्यक्रम में पूज्य तनसिंह जी का परिचय दिया। शिविर आयोजन में वी.पी. सिंह, देवेन्द्र प्रतापसिंह वाडिया, अर्जुनसिंह चोराऊ, बालाजीसिंह का पूरा-पूरा सहयोग रहा। बालिकाओं ने बहुत उत्साह के साथ भाग लिया व आगे जल्दी ही और शिविर का आयोजन करने की मांग की । यहाँ साप्ताहिक बालिका शाखा लगती हैं ।

नाथाजी स्मृति समारोह संपन्न

वीर शिरोमणी नाथाजी स्मृति संस्थान के तत्वावधान में 13 जनवरी को शिवकुंज गार्डन वैशाली नगर में नाथाजी स्मृति समारोह संत समताराम जी के सानिध्य एवं अतिरिक्त पुलिस महानिदेशक पंकज कुमार सिंह के मुख्य आतिथ्य में संपन्न हुआ। इस अवसर पर निःशुल्क स्वास्थ्य जांच एवं परामर्श शिविर व रक्तदान शिविर का भी आयोजन किया गया। समारोह को उद्योगपति भंवरसिंह नाथावत, राजपूत सभा जयपुर के अध्यक्ष गिरिराजसिंह लोटवाड़ा, स्टार फाउंडेशन की सी.ई.ओ. रुक्षमनी कुमारी चोमुं, निशक्तजन आयुक्त वीरेन्द्रसिंह बांकावत, आईपीएस भंवरसिंह नाथावत आदि ने नाथाजी के जीवन चरित्र पर प्रकाश डाला। मानसिंह ईटावा भोपजी व रामसिंह नाथावत उदयपुरिया को नाथाजी रत्न 2019 से सम्मानित किया गया। 60 वृद्धजनों, 70 प्रतिभावान विद्यार्थियों, 18 राष्ट्रीय स्तर के खिलाड़ियों एवं 11 समाजसेवियों का समारोह में सम्मान किया गया।

पाटन में प्रतिभा सम्मान

गुजरात के पाटन शहर में 21 जनवरी को पाटन शहर राजपूत समाज द्वारा प्रतिभा सम्मान समारोह एवं स्नेहमिलन आयोजित किया गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता दानसिंह सत्यार्थी ने की एवं डॉ. किरीट भाई पटेल विधायक, मंजुला बहन तहसीलदार, जीलुभा फारेस्टर आदि अतिथि के रूप में शामिल हुए। कार्यक्रम को संबोधित करते हुए दानसिंह सत्यार्थी ने कहा कि शिक्षा के साथ संस्कार आवश्यक है अन्यथा लोग डॉक्टर बनकर किडनी चोरी करेंगे। संस्कारों के अभाव में संतानें माता-पिता से दूर हो रही है इसलिए संस्कार निर्माण समाज की महत्ती आवश्यकता है।

सादगीपूर्ण विवाह

पाली जिले के रायपुर निवासी जितेन्द्रसिंह का विवाह 18 जनवरी को संपन्न हुआ जिसमें शराब आदि व्यसनों को नकारा गया एवं फिजुलखर्ची से बचते हुए बारात भी सुबह जाकर शाम को लौट आई। दुल्हे ने भी टीके आदि को नकार कर शगुन के रूप में मात्र एक रुपया और नारियल ही स्वीकारा।

समाज के लिए...

संघ का एक सक्रिय स्वयंसेवक समन्वयक के रूप में काम करेगा। अन्य सह संयोजक आजादसिंह शिवकर ने आगामी छह माह की योजना बताते हुए कहा कि अगस्त माह तक जयपुर, सीकर, झुंझुनूं, चुरू, बीकानेर, जोधपुर, बाड़मेर, जैसलमेर, जालोर, सिरोही, पाली आदि जिलों में बैठकें कर जिला स्तरीय टीमों का गठन किया जाएगा एवं तदुपरांत सितम्बर में इन सबका दो दिवसीय शिविर रखा जाएगा। इसके उपरान्त चले प्रश्नोत्तर सत्र में चर्चा कर उद्देश्यों, कार्य प्रणाली आदि को स्पष्ट किया गया।

श्री क्षात्र पुरुषार्थ फाउण्डेशन के उद्देश्य :

- समाज में सामाजिक भाव वाले युवाओं को सकारात्मक काम के लिए संयोजित करना।
- समाज में संवैधानिक मूल्यों के प्रति आदर भाव जागृत करना।
- समयानुकूल संवैधानिक साधनों एवं सरकारी योजनाओं के प्रति समाज में जागरुकता पैदा करना।
- राजनीतिक, प्रशासनिक, व्यवसायिक एवं अन्य क्षेत्रों में कार्यरत युवा नेतृत्व के बीच सम्पर्क, सामंजस्य एवं सहयोग बढ़ाकर उन्हें समाज के लिए अधिकतम उपयोगी बनाना।
- अन्य समाजों के प्रति सम्मान भाव पैदा करना।
- समाज के संभावनाशील युवा नेतृत्व को उभारना।

(पृष्ठ एक का शेष).

रानी

देलदर

(पृष्ठ तीन का शेष)

नागौर संभाग में कुचामन प्रांत द्वारा पूज्य तनसिंह जी जयंती सप्ताह का आयोजन किया गया, जिसके दौरान विभिन्न स्थानों पर कार्यक्रम आयोजित हुए जिनमें संघ के वरिष्ठ स्वयंसेवक भगवत सिंह सिंघाना, संभाग प्रमुख शिंभू सिंह आसरवा, प्रांत प्रमुख नत्थू सिंह छापड़ा, सह प्रांत प्रमुख शिवराज सिंह आसरवा ने भाग लिया। इस दौरान श्री हनुमत राजपूत छात्रावास कुचामन सिटी, श्री आयुवान निकेतन कुचामन सिटी, श्री योगेश्वर छात्रावास कुचामन सिटी, जगदंबा कॉलोनी कुचामन सिटी, बाल शाखा कुचामन सिटी, कांकरिया कॉलोनी कुचामन सिटी व आनंदपुरा में कार्यक्रमों का आयोजन हुआ। नागौर प्रान्त के गुगरियाली में भी शाखा स्तर पर अध्यापक सोहन सिंह की उपस्थिति में तनसिंह जी जयंती मनाई गई। हिम्मत सिंह गुगरियाली, प्रेम सिंह गुगरियाली सहित सभी स्वयंसेवकों ने पूज्य श्री को श्रद्धासुमन अर्पित किए।

बालोतरा प्रान्त में भी बालोतरा शहर के वीर दुर्गादास राजपूत बोर्डिंग तथा नागाणाराय होस्टल में जयन्ती कार्यक्रमों का आयोजन हुआ, जिसमें संघ के वरिष्ठ स्वयंसेवक चन्दन सिंह चांदेसरा ने पूज्य श्री के व्यक्तित्व व कृतित्व पर प्रकाश डाला। बलवंत सिंह कोटड़ी ने पूज्य श्री का जीवन परिचय प्रस्तुत किया। प्रान्त में आवासन मंडल की शाखा में भी जयन्ती मनाई गई। बाड़मेर के स्टेशन रोड स्थित मल्लीनाथ राजपूत छात्रावास में भी हर्षोल्लास से जयन्ती मनाई गई। वरिष्ठ स्वयंसेवक कमलसिंह चूली ने पूज्य श्री के संस्मरण सुनते हुए कहा कि तनसिंह जी अपने दायित्वों के निर्वहन में सदैव सजग रहते थे। उनका पूरा जीवन कर्त्तव्यपालन का उदाहरण है। प्रांतप्रमुख महिपालसिंह चूली भी कार्यक्रम में उपस्थित रहे। बाड़मेर के शिव तथा उण्डखा में भी 25 जनवरी को पूज्य श्री की जयन्ती मनाई गई। पादरू में जैतमाल राजपूत छात्रावास की नारायण शाखा में भी जयन्ती मनाई गई। इस दौरान पूज्य श्री की प्रतिमा पर पुष्प अर्पित किए गए। कार्यक्रम को प्रेमसिंह पादरू, झबर सिंह लूणा, मंगलसिंह गोठड़ा ने संबोधित किया। प्रांत प्रमुख भैरू सिंह पादरू भी उपस्थित रहे।

सिवाणा में पादरड़ी रोड स्थित जैतमाल गुरुकुल होस्टल में भी 25 जनवरी को पूज्य श्री तनसिंह जी की जयंती मनाई गई। वरिष्ठ स्वयंसेवक प्रेमसिंह राणीगांव ने कार्यक्रम को संबोधित करते हुए कहा कि तनसिंह जी ने हमारे समाज को हमारा खोया हुआ कर्त्तव्य ज्ञान लौटाया है, जैसे श्रीकृष्ण ने अर्जुन के सामने उस शाश्वत ज्ञान का पुनर्प्रतिपादन किया था। वरिष्ठ स्वयंसेवक चतर सिंह सागु ने पूज्य श्री के साथ बिताए समय के संस्मरण सुनाए। हनवंत सिंह मवड़ी ने पूज्य श्री का परिचय प्रस्तुत किया। कल्याणपुर प्रान्त के दईपडा खींचियान की बालशाखा में भी 25 जनवरी को जयंती मनाई गई। दौलतसिंह मुंगेरिया ने पूज्य श्री का परिचय प्रस्तुत किया तथा सेवानिवृत्त शिक्षाविद भंवर सिंह दईपड़ा ने पूज्य श्री के साथ बिताए समय के संस्मरण सुनाए। कल्याणपुर प्रान्त की थोब और रेवाडा शाखा में भी जयन्ती मनाई गई, जिनमें सर्वश्री वीरमसिंह थोब, हरिसिंह थोब, हुकमसिंह थोब, खेतसिंह चांदेसरा, नरेन्द्र सिंह, महेन्द्र सिंह, बाबूसिंह रेवाडा आदि उपस्थित रहे।

इसी प्रकार बीकानेर जिले के पूंगल कस्बे में जयन्ती कार्यक्रम आयोजित हुआ। जिसे खींवसिंह सुलताना, शक्ति सिंह आशापुरा, गोपालसिंह पूगल तथा भीमसिंह पूगल ने संबोधित किया। संचालन प्रभुसिंह पूंगल ने किया। इसी प्रकार गुड़ामालानी प्रान्त में संस्कारधाम छात्रावास में 25 जनवरी को जयन्ती कार्यक्रम आयोजित हुआ। गणेश वंदना व प्रार्थना के पश्चात पूज्य श्री की तस्वीर पर पुष्पांजलि अर्पित की गई। कार्यक्रम को गेनसिंह इंद्रोई, हिंदूसिंह इंद्रोई तथा देवीसिंह ने संबोधित किया। इसी प्रकार चौहटन स्थित भवानी क्षत्रिय बोर्डिंग हाउस में भी कार्यक्रम आयोजित हुआ जिसका संचालन प्रांत प्रमुख उदय सिंह देदूसर ने किया। कुंडल स्थित नागणेची माता मंदिर में भी जयन्ती के उपलक्ष्य में कार्यक्रम आयोजित हुआ। बालियाना शाखा में जयन्ती कार्यक्रम रखा गया। जिसमें संघ के स्वयंसेवकों तथा ग्रामवासियों ने पूज्य श्री को श्रद्धांजलि अर्पित की।

जैसलमेर संभाग के चांधन प्रान्त में मुलाना गांव स्थित शाखा मैदान में पूज्य श्री की जयन्ती संभाग प्रमुख गोपाल सिंह रणधा तथा वरिष्ठ स्वयंसेवक बाबू सिंह बेरसियाला की उपस्थिति में मनाई गई। कार्यक्रम में सैकड़ों की संख्या में ग्रामीण सम्मिलित हुए। प्रांत प्रमुख तारेंद्रसिंह झिंझनियाली भी उपस्थित रहे। झिंझनियाली प्रान्त में श्री भगवती विद्यालय, झिंझनियाली में 25 जनवरी को पूज्य श्री की जयन्ती वरिष्ठ स्वयंसेवक रेमत सिंह झिंझनियाली की उपस्थिति में मनाई गई। शिव प्रान्त में भारती विद्या मंदिर, शिव में समारोह पूर्वक पूज्य श्री की जयन्ती मनाई गई। कार्यक्रम को वरिष्ठ स्वयंसेवक भवानीसिंह मुंगेरिया तथा प्रांत प्रमुख राजेन्द्रसिंह भिंयाड़ ने संबोधित किया। कार्यक्रम में आसपास के गांवों के सैकड़ो स्वयंसेवकों ने भाग लिया। रतनगढ़ के गाँव नुंवा में भी 25 जनवरी को जयंती समारोह मनाया गया। जिसमें संघ के वरिष्ठ स्वयंसेवक सुमेर सिंह गुड़ा व मोहन सिंह फ्रांसा उपस्थित रहे। बीकानेर के पुन्दलसर गांव में भी 27 जनवरी को पूज्य श्री की जयंती मनाई गई।

उदयपुर में भूपाल नोबल्स पी जी कॉलेज के प्रांगण में महाराणा सांगा शाखा द्वारा 27 जनवरी को तनसिंह जी की जयंती मनाई गई जिसमें संभाग प्रमुख भंवरसिंह बेमला उपस्थित रहे। कार्यक्रम को डॉ. मदन सिंह जागसा तथा हुकुराज सिंह सैणा ने भी संबोधित किया। डाबियो का गुड़ा की झाला मान शाखा में भी पूज्य श्री की जयंती मनाई गई। शेखावाटी प्रान्त के अंतर्गत सीकर शहर में स्थित कल्याण राजपूत छात्रावास में जयन्ती मनाई गई। मीरा स्कूल और बिडोली हाउस में भी जयंती कार्यक्रम रखें गए। सीकर स्थित दुर्गा महिला संस्थान के पद्मिनी छात्रावास में भी पूज्य श्री की जयन्ती मनाई गई जिसमें बालिकाओं ने पूज्य श्री पर स्वरचित कविताएं सुनाई। वरिष्ठ स्वयंसेवक बलवन्त सिंह महनसर कार्यक्रम में उपस्थित रहे। अजमेर में केकड़ी में भी जयन्ती समारोह का आयोजन हुआ। जालोर प्रांत के आहोर मंडल की मोरूआ व बेदाना शाखा में भी जयंती मनाई गई।

बाड़मेर

जोधपुर

प्रताप युवा शक्ति ने किया रक्तदान

पूज्य तनसिंह जी की जयंती के अवसर पर आयोजित साप्ताहिक कार्यक्रमों की शृंखला का आगाज प्रताप युवा शक्ति द्वारा रक्तदान से किया गया। जयपुर इकाई द्वारा संघ के केन्द्रीय कार्यालय 'संघशक्ति' एवं मालवीय नगर स्थित चामुंडा माता मंदिर परिसर में रक्तदान किया गया। संघशक्ति में माननीय संघ प्रमुख श्री द्वारा रक्तदाताओं को प्रशस्ति पत्र दिए गए। मुंबई शहर में मुंबई प्रांत की शाखाओं एवं प्रताप युवा शक्ति के कार्यकर्ताओं द्वारा मीरा भायंदर म्युनिसिपल कॉर्पोरेशन के राजीव गांधी ब्लड बैंक में रक्तदान किया गया। इसी प्रकार युवा शक्ति की पूणे शाखा द्वारा 13 जनवरी को राजस्थान राजपूत समाज दुर्गा माता मंदिर प्रांगण में रक्तदान किया गया।

राव कूंपा की 516वीं जयंती मनाई

पाली जिले के राणावास स्थित गोविंद शिक्षण संस्थान में 13 जनवरी को गिरी सुमेल युद्ध के नायक राव कूंपाजी की 516वीं जयंती मनाई गई। जयंती समारोह को विधायक खुशवीर सिंह, पूर्व सांसद नारायणसिंह माणकलाव, प्रधान सुमेरसिंह कुंपावत आदि वक्ताओं ने संबोधित किया। वक्ताओं ने राव कूंपाजी के जीवन के बारे में बताते हुए उन्हें एक कुशल सेनानायक के साथ-साथ कुशल एवं प्रजापालक शासक भी बताया। इतिहास से सीख लेकर वर्तमान परिस्थितियों के अनुरूप साधनों को अपनाने की बात भी कही गई।

वीर आलाजी की जयंती मनाई

संकट के समय जैसलमेर की रक्षा के लिए प्राण न्यौछावर करने वाले गुरुभक्त आलाजी की जयंती प्रतिवर्ष की भांति 27 जनवरी को जैसलमेर के मूलसागर में मनाई गई। कार्यक्रम को संबोधित करते हुए ख्याला महंत गोरखनाथ ने कहा कि आलाजी को उनके गुरु वीरनाथ का आशीर्वाद था, जैसलमेर उनका बलिदान कभी नहीं भूल सकता। गजरूप महंत बालभारती ने कहा कि आलाजी से प्रेरणा लेकर युवाओं को राष्ट्र व धर्म की रक्षा के लिए आगे आना चाहिए। संघ के संभाग प्रमुख गोपालसिंह रणधा ने कहा कि क्षात्रियत्व त्याग से ही संभव है। स्वार्थी लोग क्षत्रियत्व को नहीं अपना सकते। आलाजी के बलिदानी जीवन का परिणाम है कि आज यहां ही नहीं बल्कि पाकिस्तान में भी उनकी पूजा की जाती है। महेन्द्र बोरावट ने मंदिर परिसर के विस्तार की योजना की जानकारी दी। समारोह के लाभार्थी हुकमाराम प्रजापत ने सभी का आभार जताया। संचालन हाकमसिंह देवड़ा ने किया।

ओसियां में 135 प्रतिभाओं एवं सहयोगियों का सम्मान

गजसिंह शिक्षण संस्थान ओसियां के तत्वावधान में 13 दिसम्बर को प्रतिभा सम्मान समारोह का आयोजन किया गया जिसमें 135 विद्यार्थियों एवं समाज में आर्थिक सहयोग करने वालों को प्रशस्ति पत्र एवं स्मृति चिह्न देकर सम्मानित किया गया। समारोह को संबोधित करते हुए केन्द्रीय कृषि राज्यमंत्री गजेन्द्रसिंह शेखावत ने कहा कि कठिन परिश्रम का कोई सानी नहीं है, कठिन परिश्रम करने पर मंजिल स्वतः ही हासिल होती है। समारोह को बीज निगम के पूर्व अध्यक्ष शंभुसिंह खेतासर, महेन्द्रसिंह उम्मेदनगर, भोपालसिंह बड़ला, हनुमानसिंह खांगटा, पदमसिंह ओसियां, ब्रिगेडियर फतेहसिंह, उम्मेदसिंह डाबड़ी, गुलाबसिंह भाटी आदि ने भी संबोधित किया। वक्ताओं ने कठिन परिश्रम, शिक्षा, खेलकूद, आर्थिक आरक्षण, सामाजिक रूढ़ियों, विधानसभा चुनाव आदि विषयों पर अपनी बात कही। कार्यक्रम का संचालन हरिनारायणसिंह राठौड़ व भोमसिंह पंवार ने किया।

जौहर स्मृति संस्थान के चुनाव संपन्न

चित्तौड़गढ़ स्थित जौहर स्मृति संस्थान के 13 जनवरी को चुनाव संपन्न हुए जिनमें निम्न पदाधिकारियों का चुनाव किया गया। नई कार्यकारिणी में मनोहरसिंह थाणा व कर्नल रणधीरसिंह बस्सी को संरक्षक चुना गया। डॉ. तखतसिंह सोलंकी (फाचर) को अध्यक्ष, शक्तिसिंह मुरलिया को वरिष्ठ उपाध्यक्ष, भगवती झाला को महिला उपाध्यक्ष, नरपतसिंह भाटी को कोषाध्यक्ष, मंगलसिंह झाड़ोली को महामंत्री एवं गजराजसिंह बराड़ा को संयुक्त मंत्री निर्वाचित किया गया। भीलवाड़ा, उदयपुर, प्रतापगढ़, राजसमंद, डूंगरपुर, बांसवाड़ा एवं मध्यप्रदेश के लिए जिला उपाध्यक्ष महिला एवं पुरुष पृथक-पृथक निर्वाचित किए गए। चुनाव अधिकारी की भूमिका पूर्व सांसद हेमेन्द्रसिंह बनेड़ा व पूर्व विधायक प्रदीप कुमार सिंह ने निभाई।

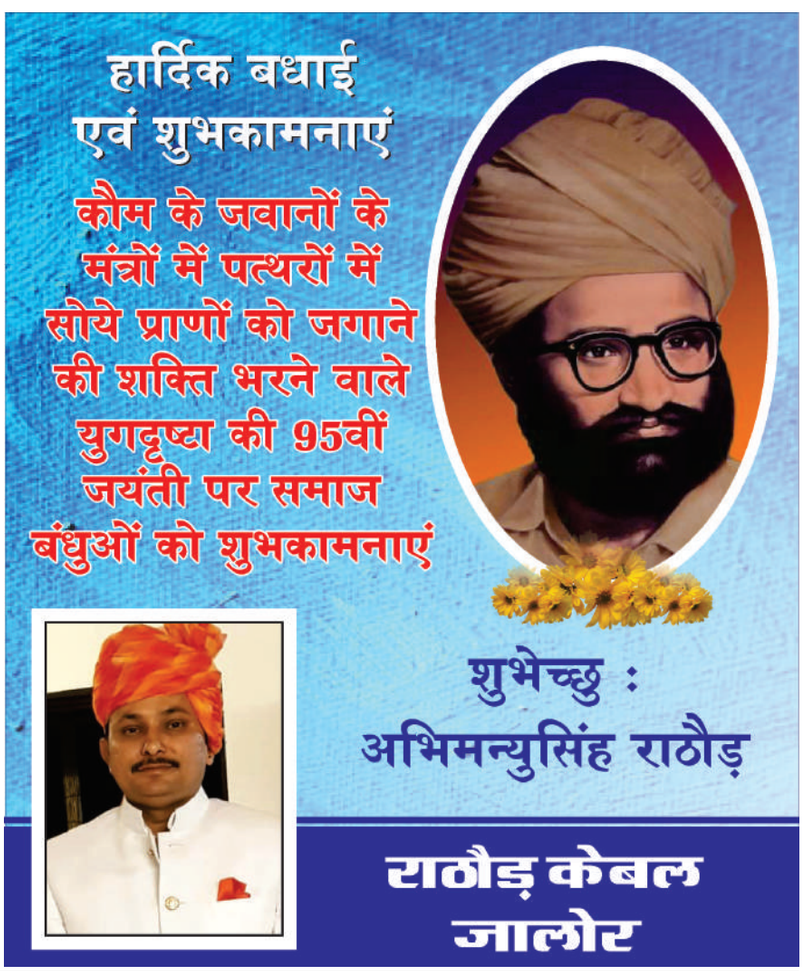

श्री संघशक्ति प्रकाशन प्रन्यास (मालिक) के लिए मुद्रक व प्रकाशक लक्ष्मणसिंह द्वारा गजेंद्र प्रिन्टर्स, सांगों का रास्ता, किशनपोल बाजार, जयपुर-302003 (दूरभाष 2313462) से मुद्रित एवं ए/8, तारानगर, झोटवाड़ा, जयपुर- 302012 **(दूरभाष: 2466353 व 2466387)** से प्रकाशित। सम्पादक- लक्ष्मणसिंह। Email:- pathprerak1997@gmail.com, Web site:- www.shrikys.org